

४७। ॥ निष्ठुर श्वेत कपोले वेष्टना अवृत्ति लिप्ति विमुक्ति ॥ अंगुष्ठ ॥ अवण्णु विमुक्ति
दक्षावकेदय प्रतिश्वास लम्बना विमुक्ति ॥ श्वेत ॥ उपस्थिति विमुक्ति ॥ श्वेत
संदय इव विमुक्ति कृपा श्वेत विमुक्ति विमुक्ति ॥ विमुक्ति ॥ विमुक्ति
विमुक्ति ॥ विमुक्ति ॥

४७। ॥५६८॥ युपर्वक्तव्यसम्बन्धाना ॥ ५६९॥ लेपिष्ठिकेवं प्रियमित्रेण
पवेद् ॥ ५७०॥ क्षेत्रम् विश्वामीवासुषाः ॥ ५७१॥ क्षेत्रक्षेत्रां च वक्त्रं प्रज्ञानं
पत्त्वा यस्याः ॥ ५७२॥ युपमार्द्धिष्ठिपर्वत्यस्याः ॥ ५७३॥ प्रद्वयाः सुभृत्य
द्वयस्तस्याः ॥ ५७४॥ युपद्वयस्त्रियाः पुक्त्वा यस्याः ॥ ५७५॥ युपेष्ठम् शुक्त्वा यस्याः
हृष्ट्वा युपम् शुक्त्वा यस्याः ॥ ५७६॥ उक्त्वा युपम् युक्त्वा यस्याः ॥ ५७७॥
लेपिष्ठिकेवं प्रियमित्रेण पवेद् ॥ ५७८॥ युपर्वक्तव्यसम्बन्धाना ॥ ५७९॥